348/17/7/13

Name of Scholar : SHABNAM

Name of Supervisor : Dr. Farida Khanam

Department of Islamic Studies, Faculty of Humanities and Languages, Jamia Millia Islamia, N. Delhi

Topic : Muslim Aurat Asr-e-Hazir Ke Hindustani Tanazur Mein

ABSTRACT

इस्लाम ने इन्सानियत को क्या दिया, ख़ास तौर से महिलाओं को। इसलाम के इन्सानी सभ्यता पर क्या असरात पड़े, औरतों के हालात इस्लाम से पहले क्या थे? मैंने इस लेख में "मुस्लिम महिलाओं के दीनी, दुनियावी और इल्मी हालात में क्या बदलाव आया और उनको क्या अधिकार मिले" का इस्लाम की तालीम के पसे पंज़र में शोध करने की कोशिश की है। आधुनिक दौर के विद्वानों ने यह बहस छेड़ दी थी कि इस्लामी सभ्यता में महिला को उसका जाएज़ स्थान नहीं मिला हुआ है। इस लिए इस्लामी समाज उन्नति के रास्ते पर आगे नहीं बढ़ सकता। ख़ास तौर पर नश्अते सानिया (Renaissance) के बाद तो यह टिप्पणी होने लगी कि मुस्लिम समाज में महिला को आज़ादी न मिलने की वजह से ही वह तालीम, आर्थिक और दूसरे मैदान में कभी आगे नहीं बढ़ सकती। दूसरे लफ्ज़ों में यह मज़हब असल में इन्सानी तरक्क़ी की राह में एक रूकावट है।

मुस्लिम महिलाओं के पिछड़ने की अस्ल वजह इसलाम नहीं, बल्कि दूसरे कारण है जो इसके ज़िम्मेदार हैं। जैसे कि मुसलमानों में तालीम की कमी, मुस्लिम लीडरों या संस्थानों का साइंस और टेकनालोजी से दूर होना और खुद अपनी फ़िक्री बुनियाद से दूर होना। आज इन सब कारणों को दूर करना और अपनी जड़ों को जिन्दा करने की ज़रुरत है।

कुरआन व हदीस के अध्ययन से यह बात पता चलती है कि मुस्लिम महिलाएं जीवन के हर मैदान में शरीअत पर चलते हुए सारे काम कर सकती हैं। भारत के माहौल को सामने रखते हुए गौर किया जाए तो यह बात पता चलती है कि कि एक सेकुलर माहौल में मुस्लिम महिला किस तरह अपने

गुनों को निखार सकती है।

इसके सिवा इस्लाम में शिक्षा की अहमियत पर बहुत ज़ोर दिया गया है। इस बात को पैग़म्बरे इस्लाम ने ज़ोर देकर कहा कि हर किसी पर चाहे वह महिला हो या पुरूष सब के लिए इल्म हसिल करना ज़रुरी है।

इस्लाम के प्रारंभिक दौर में मुस्लिम महिलाएं हर मैदान में आगे थी। हदीस और फ़िक़्ह के मैदान में मुस्लिम महिलाओं के बड़े कारनामे हैं। इसी तरह कुछ नए उलूम, जैसे कि चिकित्सा और निर्माण के मैदान में भी मुस्लिम महिलाएं इस्लाम के आरंभिक दौर से लेकर मध्य काल तक काफ़ी कोमों में व्यस्थ रही हैं।

मुस्लिम महिलाओं के सामने जो कठिनाइयां हैं उनका तअल्लुक़ इस्लाम से नहीं है। कुछ का तअल्लुक भारती सभयता से है, जैसे जहेज़ और वरासत का मस्ला। और कुछ मसाएल को मुस्लिम विद्वानों से जोड़ा जा सकता है जैसे कि पर्दा, और आधुनिक शिक्षा के मैदान में मुस्लिम महिलाओं को आगे न बढ़ने देना। इस्लाम की तालीम से इन मसाएल का कोई लेना देना नहीं।

इस्लाम में महिला को हर तरह से बराबरी का अधिकार दिया गया है। जो अधिकार पुरूषों के हैं वही अधिकार महिलाओं को दिए गए हैं। दोनों में इज्ज़त और दर्जे के लेहाज़ से कोई फ़र्क़ नहीं है। मगर यह कहना सही होगा कि इस्लाम में महिला और पुरूष के मैदाने अमल (work place) में फर्क़ रखा गया है। मिसाल के तौर पर जंग का मैदान पुरूषों के लिए है और जहां तक महिलाओं का तअल्लुक़ है उनका मैदान ख़ास तौर पर तालीम का मैदान है। लेकिन यह सिर्फ़ मैदाने अमल का फ़र्क़ है जहां तक इज़्ज़त और सम्मान की बात है उसमें दोनों के बीच कोई फ़र्क नहीं।

Shabnam